अब सावरकर के पर्दाफाश की बारी

विजय शंकर सिंह

आरएसएस/बीजेपी के आईटी सेल ने 2014 के बाद गांधी जी के बारे में मनगढ़ंत प्रोपेगेंडा अभियान चलाया। बीसवीं सदी के महानतम नायकों में से एक महात्मा गांधी के खिलाफ़ तरह-तरह की बातें फैलाई गईं। व्हाट्सएप के माध्यम से लोगों को भ्रमित किया गया। लोग भ्रमित भी हुए, लेकिन लोगों ने गांधी पर पढ़ना शुरू किया। उनकी हत्या का भी औचित्य इस संगठित प्रोपेगेंडा गिरोह ने फैलाया। गोया, उनका हत्यारा एक पुनीत कार्य कर गया था और गांधी की हत्या जरूरी थी। पर जब इतना दुष्प्रचार फैला तो, उनके लेख, उन पर लिखी किताबें, ढूंढ-ढूंढ कर पढ़ी जाने लगीं। लोगों ने गांधी पर पुनर्पाठ तो किया ही, पुनर्लेखन भी शुरू हुआ। परिणामस्वरूप नई-नई किताबें भी सामने आईं। उनका अध्ययन शुरू हुआ और लोग, खुद ही, सच से रूबरू होने लगे।

फिर उन्होंने जवाहारलाल नेहरू का सेजरा ढूंढा, उन्हें किसी गयासुद्दीन गाजी का वंशज बताया गया। नेहरू परिवार को अंग्रेजों का खैरख्वाह, बताया गया। नेहरू के अय्याशी के किस्से गढ़े गए और उनकी शाहखर्ची की बातें फैलाई गईं। लोगों की दिलचस्पी नेहरू में जगी और तब लोगों ने नेहरू की लिखी और उन पर लिखी किताबें पढ़नी शुरू कीं और लोग, नेहरू की खूबियों और खामियों से अवगत होने लगे। धीरे धीरे, संघी मित्रों और आईटी सेल का गयासुद्दीन गाजी वाला बुखार उतर गया।

नेहरू और पटेल के सामान्य राजनैतिक और वैचारिक मतभेद को एक समय खूब हवा दी गई। यह तक कहा गया कि पटेल की अंत्येष्टि और अंतिम यात्रा में नेहरू शामिल नहीं हुए थे, पर जब नेहरू पटेल के आपसी पत्राचार सार्वजनिक हुए और लोगों ने उन्हें पढ़ा तो, पटेल ने जो बातें आरएसएस और सावरकर के लिए गांधी हत्या के बाद कही थीं, उससे यह झुठबोलवा गिरोह खुद ही शांत हो गया। इस गिरोह का उद्देश्य पटेल का महिमामंडन बिल्कुल नहीं था, बल्कि वे हर वह मौका ढूंढते हैं कि नेहरू को नीचा और अप्रासंगिक दिखा सकें। पर यह दुष्प्रचार भी ज्यादा नहीं चला, ध्वस्त हो गया।

सुभाष बाबू से जुड़ी क्लासीफाइड फाइल्स को लेकर एक समय खूब शोर मचाया गया। नेताजी के एक प्रपौत्र को भी भाजपा सामने लाई। वे फाइलें सार्वजनिक हुईं पर सुभाष और नेहरू के वैचारिक मतभेदों के बाद भी दोनों महान नेताओं में कोई निजी विवाद नहीं था। नेहरू जब आजाद हिंद फौज की तरफ से बचाव पक्ष के रूप में, कांग्रेस द्वारा गठित वकीलों के पैनल के प्रमुख, भूलाभाई देसाई के साथ अदालत में खड़े होते हैं तो देश का वातावरण ही बदल जाता है। आईएनए के जांबाज बिना सजा पाए ही छूट जाते हैं, और वे गांधी जी से, इस अवसर पर उनसे मिलते हैं और सलामी देते हैं। नेताजी की बेटी अब भी जिंदा हैं और वे अपने पिता और नेहरू दोनों को ही महान बताती हैं। मीडिया चैनल आजतक की अंजना ओम कश्यप का नेताजी की बेटी अनिता के साथ हुई बातचीत यूट्यूब पर उपलब्ध है, उसे देखा जा सकता है। अब जरा यह भी खोज लीजिए, और संघी मित्रों से यह भी पूछिए कि सावरकर, गोलवलकर, डॉ श्यामा प्रसाद मुखर्जी उस समय कहां थे? सावरकर तो बैरिस्टर भी थे, क्या उनका कोई बयान आईएनए के जांबाज लड़ाकों के पक्ष में उस समय आया था, या दिखा ?

झुठबोलवा गिरोह का अब निशाना है मध्यकालीन इतिहास और विशेषकर मुगल काल और उसमें भी औरंगजेब का शासन काल। इतिहास का पुनर्पाठ हो रहा है और अब लोगों ने मध्यकालीन इतिहास से जुड़ी किताबें, लेख पढ़ना शुरू कर दिया। सर यदुनाथ सरकार पुनः प्रासंगिक हो गए। ताजमहल के बहाने मुगल स्थापत्य पर चर्चा होने लगी। इस गिरोह के पास केवल पीएन ओक के अतिरिक्त, कोई भी ऐसा संदर्भ नहीं है जिसे वे बहस में ले आएं, और ओक की सारी ऐतिहासिक धारणाएं अप्रमाणित हो चुकी हैं। तब उन्होंने दीया कुमारी जी जो, बीजेपी की सांसद और जयपुर राज घराने की हैं को आगे किया पर सोशल मीडिया पर आमेर और अन्य राजपूत राजघरानों के मुगलों से वैवाहिक संबंध जब चर्चा में आए तो वे भी असहज हुए बिना नहीं रह सकीं। अब उनके भी बयान नहीं दिखते हैं।

अब नायक की तलाश में बदहवास आईटी सेल और झुठबोलवा गिरोह सावरकर को धो पोंछ कर सामने लाया। सावरकर को वीर कहा जाता है, पर वीर उन्हें कहा किसने, यह वे आप को नहीं बताएंगे। सावरकर के जीवन के दो पहलू हैं एक अंडमान के पहले, दूसरा अंडमान के बाद। अंडमान के पहले वे प्रखर स्वाधीनता संग्राम सेनानी रहते हैं, इंडिया हाउस लंदन में श्याम जी कृष्ण वर्मा के साथ आजादी की अलख जगाते हैं, 1907 में 1857 के विप्लव की स्वर्ण जयंती इंडिया हाउस, लंदन में मनाते हैं और 1857 पर सबसे पहली पुस्तक लिखते हैं और उसे देश का प्रथम स्वाधीनता संग्राम कहते हैं।

वह किताब अंग्रेज सरकार जब्त कर लेती है और उस समय सावरकर निश्चित रूप से एक सेनानी के रूप में उभरते हैं। 1909 में उनकी गांधी से लंदन में मुलाकात होती है। गांधी जी दक्षिण अफ्रीका सत्याग्रह के संबंध में लोगों को वहां के हालात बताने के लिए ब्रिटेन के दौरे पर थे। वह मुलाकात दो विपरीत सोच के लोगों की थी। गांधी, अपने मूल दर्शन अहिंसा के साथ थे तो, सावरकर, सशस्त्र संघर्ष की अभिलाषा रखते थे। यह दोनों की पहली मुलाकात थी। इस मुलाक़ात के बाद, दोनों में कोई बहुत संपर्क नहीं रहा। गांधी उस यात्रा में अंग्रेजी हुकूमत के रवैए से निराश हुए और उसी यात्रा की वापसी में उन्होंने हिंद स्वराज नामक एक पुस्तिका लिखी है। वह पुस्तिका प्रश्नोत्तर में है और वह उनके स्वाधीनता आंदोलन के भावी विचारों की एक रूपरेखा है।

लेकिन अंडमान के बाद जो सावरकर उभरते हैं वे अंडमान पूर्व सावरकर से बिल्कुल अलग होते हैं। वे लंबे लंबे माफीनामे लिखते हैं, अंग्रेजी राज के वफादार रहने की कसमें खाते हैं, अंग्रेजों की पेंशन कुबूल करते हैं, नस्ली राष्ट्रवाद की अवधारणा गढ़ते हैं, न तो भगत सिंह की फांसी पर वे जुबान खोलते हैं और न ही सुभाष के अनोखे एडवेंचरस आईएनए अभियान पर कुछ बोलते हैं, हिंदू राष्ट्रवाद और मुस्लिम राष्ट्रवाद की गलबहियां करते हुए, जिन्ना के हमराह और हम खयाल बनते हैं। उनकी नाराजगी यदि गांधी से थी तो वे अपने स्तर से भी तो आजादी का आंदोलन चला सकते थे ? उन्होंने ऐसा क्यों नहीं किया? यह सवाल एक जिज्ञासा है जो सावरकर में अंडमान बाद के बदलाव को देखते हुए स्वाभाविक रूप से हर जिज्ञासु मस्तिष्क में, उठता है।

यदि सावरकर की चर्चा और उनका अनावश्यक दुष्प्रचार पर आधारित महिमामंडन न किया जाता तो यह सारे सवाल बिल्कुल नहीं उठते। सावरकर वैसे भी गांधी जी की हत्या के बाद लोगों के चित्त से उतर गए थे। बेहद एकांत में उनके अंतिम दिन गुजरे और उन्होंने जैन मत से संथारा करके अपने प्राण त्यागे। कहीं यह उनका पश्चाताप तो नहीं था? पर इधर फिर उन पर तरह तरह की बातें की जा रही हैं। स्वाधीनता आंदोलन का एक महत्वपूर्ण केंद्र के रूप में उन्हे प्रस्तुत किया जा रहा है। अब जब बात निकली है तो वह दूर तलक जायेगी भी। अब उनके बारे में भी लोगों ने पढ़ना शुरू कर दिया है। अब यह भी ढूंढा जाएगा कि, उन्हें वीर कहा किसने था, और कब कहा था? वे अंग्रेजों को दिए वादे निभाते रहे, जिसमें उन्होंने किसी भी राजनीतिक गतिविधियों में भाग न लेने का वादा किया था, तो फिर वे नस्ली राष्ट्रवाद जैसा विभाजनकारी एजेंडा लेकर क्यों सामने आए, जो ब्रिटिश और मुस्लिम लीग को सीधे-सीधे लाभ पहुंचाता था?

उनका वैर गांधी से था, पर वे भगत सिंह की फांसी पर चुप्पी क्यों साधे रहे? जिन्ना और ब्रिटिश के प्रति उनके अतिशय लगाव के कारण उनके सिपहसालार डॉ श्यामा प्रसाद मुखर्जी भी एक समय दूर हो गए थे। आखिर यह सब हुआ क्यों। मिथ्या और फरेबी महिमामंडन का एक अच्छा परिणाम यह हुआ है कि, लोग अब सावरकर पर नए सिरे से पढ़ने लगे हैं और इन सवालों के जवाब ढूंढने लगे हैं। दरअसल आरएसएस/बीजेपी के आईटी सेल की समस्या यह भी है कि, वह अपने विरोधियों को अनपढ़ और कुपढ़ समझता है और बिल्कुल, ऐसा ही गोयबेल भी अपने समय में समझता था।

हरियाणा से उम्मीदवार क्यों नहीं बने सुरजेवाला? छत्तीसगढ़, राजस्थान, महाराष्ट्र से हकमारी क्यों?

प्रेम कुमार

कांग्रेस ने राज्यसभा उम्मीदवारों की जो सूची जारी की है उसे देखकर खुद कांग्रेसी हैरान हैं। ऐसा नहीं है कि इनमें से कोई नाम नया है या कोई उम्मीदवार अयोग्य है। बल्कि, हैरानी की वजह है कि राजनीतिक नजरिए से इस सूची में कोई रणनीति नज़र नहीं आती। राज्यसभा उम्मीदवारों की सूची में प्रियंका गांधी का नाम नहीं है तो यही वह इकलौती महत्वपूर्ण बात है जो कांग्रेस नेतृत्व को नैतिक बल देती है।

राजस्थान और छत्तीसगढ़ जैसे प्रदेश जहां कांग्रेस चुनाव में जाने की तैयारी कर रही है वहां से कोई राजस्थानी या छत्तीसगढ़ी राज्यसभा में न जाए तो यह हैरान करने वाला निर्णय लगता है। राजस्थान और छत्तीसगढ़ के लिए यह भावनात्मक मुद्दा हो सकता है जिस बारे में शायद कांग्रेस नेतृत्व सोच नहीं सका है। कमोबेश ऐसी ही भावना का सामना महाराष्ट्र में भी कांग्रेसजनों को विधानसभा चुनाव के वक्त करना पड़ सकता है।

गहलोत-पायलट ने क्यों होने दी बंदरबांट?

राजस्थान से राज्यसभा के लिए तीन नामों को तय किया गया है-रणदीप सुरजेवाला, मुकुल वासनिक और प्रमोद तिवारी। तीनों नेता बड़े हैं लेकिन किन्हीं का संबंध राजस्थान से नहीं है। दो सवाल तुरंत पैदा होते हैं। क्या कोई राजस्थानी नेता राज्यसभा के योग्य नहीं मिला? दूसरा सवाल पैदा होता है कि राजस्थान से बाहर के उम्मीदवारों पर राजस्थानी नेतृत्व को कोई आपत्ति क्यों नहीं हुई?

दोनों ही सवालों के जवाब तलाशने के लिए भी कई सवाल करने होंगे। क्या राजस्थान में अगले विधानसभा चुनाव के लिए चेहरा तय कर लिया गया है? या चेहरा तय करने से पहले भावी चेहरों के सामने 'समर्पण' दिखाने की अघोषित शर्त थोप दी गयी है?

आखिर क्यों मुख्यमंत्री अशोक गहलोत और सचिन पायलट को इस बात पर नाराज़गी नहीं होनी चाहिए कि राजस्थान के हिस्से से राज्यसभा जाने वाले नेताओं का हक छीन लिया गया है? अगर नाराज़गी नहीं है तो क्या यह अंदरखाने किसी मोल-तोल का नतीजा है? अगर हां, तो इसे कांग्रेस के भीतर बची-खुची मलाई की बंदरबांट क्यों नहीं समझी जाए?

छत्तीसगढ़ नेतृत्व ने 'समर्पण' किया या हुई मोल-तोल?

छत्तीसगढ़ की स्थिति भी राजस्थान जैसी है। छत्तीसगढ़ के नेताओं को राज्यसभा भेजने के बजाए रंजीता रंजन और राजीव शुक्ला को यहां से राज्यसभा उम्मीदवार बनाया गया है। बिहार और यूपी में कांग्रेस विधानसभा चुनाव में फिसड्डी साबित हुई। लोकसभा चुनावों में भी ऐसे नेता कांग्रेस की ताकत में कुछ बढ़ोत्तरी कर पाएंगे, ऐसा नहीं लगता। फिर इन नेताओं के लिए दूसरे प्रदेश का हक क्यों छीना गया? छत्तीसगढ़ के लोगों को इससे क्या फायदा होगा?- इसका जवाब जनता जरूर कांग्रेस से पूछती रहेगी।

महाराष्ट्र एक और प्रदेश है जहां कांग्रेस अपने दम पर तो नहीं लेकिन गठबंधन सरकार में है। यहां से वह एक उम्मीदवार को राज्यसभा भेजने की क्षमता रखती है। यहां भी कांग्रेस को कोई मराठी नेता नहीं मिल सका। यूपी के कांग्रेसी नेता इमरान प्रतापगढ़ी को वफादारी का ईनाम कांग्रेस देना चाहती थी मगर ऐसा करते हुए महाराष्ट्र के वफादार कांग्रेसियों की अनदेखी तो हुई। फिल्म अभिनेत्री नगमा ने ट्वीट कर पूछा है कि 18 साल की वफादारी में इमरान प्रताप गढ़ी के मुकाबले क्या कमी रह गयी? ऐसे सवाल कई नेताओं के मन में होंगे। कुछ सामने आएंगे, कुछ नहीं आएंगे।

राजस्थान और छत्तीसगढ़ दोनों प्रदेशों में कांग्रेस की सरकार है और दोनों ही जगहों पर नेतृत्व बदलने की आवाज़ उठती रही है क्योंकि नेतृत्व ने अपने ही नेताओं से ऐसा वादा कर रखा था। दोनों ही प्रदेशों में मुख्यमंत्री या इस पद पर दावे कर रहे नेताओं की चुप्पी है। दोनों ही राज्यों में चुनाव भी होने वाले हैं और जनता के बीच यह मुद्दा जरूर उठेगा कि छत्तीसगढ़ हो या राजस्थान- इनका हक क्यों छीन लिया गया?

महाराष्ट्र में भी मच रहा है बवाल

महाराष्ट्र एक और प्रदेश है जहां कांग्रेस अपने दम पर तो नहीं लेकिन गठबंधन सरकार में है। यहां से वह एक उम्मीदवार को राज्यसभा भेजने की क्षमता रखती है। यहां भी कांग्रेस को कोई मराठी नेता नहीं मिल सका। यूपी के कांग्रेसी नेता इमरान प्रतापगढ़ी को वफादारी का ईनाम कांग्रेस देना चाहती थी मगर ऐसा करते हुए महाराष्ट्र के वफादार कांग्रेसियों की अनदेखी तो हुई। फिल्म अभिनेत्री नगमा ने ट्वीट कर पूछा है कि 18 साल की वफादारी में इमरान प्रताप गढ़ी के मुकाबले क्या कमी रह गयी? ऐसे सवाल कई नेताओं के मन में होंगे। कुछ सामने आएंगे, कुछ नहीं आएंगे।

हुड्डा के डर से भागे सुरजेवाला?

कांग्रेस की सूची में चौंकाने वाली बात यह भी लगती है कि रणदीप सुरजेवाला को हरियाणा से राज्यसभा उम्मीदवार नहीं बनाकर अजय माकन को बनाया गया है। रणदीप सुरजेवाला हरियाणा के मूल निवासी हैं। यहीं से वे दो बार विधायक और हुड्डा मंत्रिपरिषद के सदस्य रह चुके हैं। प्रदेश में कांग्रेस के वरिष्ठ पदों पर भी रह चुके हैं। इसके बावजूद हरियाणा से उन्हें उम्मीदवार बनाना कांग्रेस नेतृत्व को सुरक्षित क्यों नहीं लगा?

ऐसा लगता है कि भूपेंद्र सिंह हुड्डा और रणदीप सुरजेवाला के बीच 36 के आंकड़ों के कारण कांग्रेस नेतृत्व जोखिम उठाने को तैयार नहीं हुआ। अगर ऐसा है तो यह नेतृत्व की मजबूती नहीं, कमजोरी को बताता है कि रणदीप सुरजेवाला जैसे कांग्रेस के राष्ट्रीय महासचिव और मुख्य प्रवक्ता को भी पार्टी उनके ही मातृ प्रदेश से उम्मीदवार नहीं बना सकती। अजय माकन को हरियाणा से राज्यसभा उम्मीदवार बनाए जाने से पता चलता है कि नाम तय करने में भूपेंद्र सिंह हुड्डा महत्वपूर्ण फैक्टर रहे।

खुशकिस्मत रहे विवेक तन्खा

तमिलनाडु से पी चिदम्बरम, कर्नाटक से एस जयराम रमेश जैसे नाम राज्यसभा के लिए चुने गये हैं तो इस पर शायद ही कोई सवाल खड़े हों। मध्यप्रदेश से विवेक तन्खा को दोबारा राज्यसभा भेजा जा रहा है तो इस फैसले पर भी कोई सवाल नहीं बनता। जी-23 का सदस्य होकर भी विवेक तन्खा खुशनसीब हैं कि उनका हश्र आनन्द शर्मा, गुलाम नबी आज़ाद जैसे नेताओं की तरह नहीं हुआ। न ही उन्हें कपिल सिब्बल की तरह राज्यसभा के लिए कांग्रेस छोड़नी पड़ी और निर्दलीय उम्मीदवार बनकर किसी राजनीतिक दल के साथ साठगांठ करनी पड़ी।

कांग्रेस ने राज्यसभा में भेजने के लिए जो टीम चुनी है उसमें कोई नाम चौंकाने वाला नहीं है। चौंकाने वाली बात सिर्फ इतनी है कि महाराष्ट्र से कोई मराठी नहीं मिला, तो छत्तीसगढ़ से कोई छत्तीसगढ़ी। राजस्थान से भी कोई राजस्थानी नेता नहीं खोज पायी कांग्रेस जबकि हरियाणा से दिल्ली के नेता राज्यसभा जाएंगे तो जो हरियाणा के हैं वो राजस्थान से चुने जाएंगे। यह स्थिति बताती है कि राज्यसभा की सीटों की कांग्रेस के भीतर बंदरबांट हुई है।